विक्रम संवाद

पाक्षिक आलेख सेवा/नि:शुल्क वितरण के लिए

सम्पादक
महाराज विक्रमादित्य शोध पीठ
1, उदयन मार्ग, उज्जैन-456010
फोन : 0734-2521499, 0755-2660407
e-mail : mvspujjain@gmail.com
vikramadityashodhpeeth@gmail.com

इस अंक में

पृष्ठ क्र. 1-3
मालवा की लोक स्मृति में राजा भोज
डॉ. भगवतीलाल पुरोहित

पृष्ठ क्र. 4-5
चोरों का संगी राजा भोज
डॉ. पूरन सहगल

पृष्ठ क्र. 6-7
आस्था के राम सेतु पर लगेगी वैज्ञानिकता की मुहर
अजय बोकिल

पृष्ठ क्र.- 8
पुस्तक चर्चा
किंवदंती पुरुष महाराज भोज
डॉ. पूरन सहगल

मालवा की लोक स्मृति में राजा भोज

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित

राजा भोज का जितना लेखनी के क्षेत्र में योगदान है, वह किसी से अनजाना नहीं है। राजा भोज की ऐतिहासिक उपलब्धियों के प्रमाण अभिलेखों, प्रतिमाओं, भवनों, सार्वजनिक निर्माणों, उनकी समकालीन प्रशस्तियों, पुस्तकों, परवर्ती ग्रंथों तथा लोकव्यापी कथा-कहानियों से विज्ञात और प्रमाणित हैं। राजा भोज की सांस्कृतिक अभिरुचियों तथा साहित्यिक अनुराग के प्रमाण भोज प्रबंध सहित अनेक ग्रंथ हैं। संस्कृत, प्राकृत, देशी, विभिन्न भाषाओं, बोलियों तथा परदेसी साहित्य भी राजा भोज संबंधी ऐतिहासिक, लौकिक, मिथकीय व्यक्तित्व को कई-कई रूपों में प्रकट और प्रसारित करता रहा। राजा भोज अपने समकाल में ही लोकाकर्षण का केन्द्र बन गया था। यहाँ तक कि उसके राजकीय शत्रु भी उसके व्यक्तित्व और कृतित्व को आदर्श मानकर उसके अनुकरण का प्रयास करते थे। गुजरात का राजा भीमदेव तो वेश बदलकर राजा भोज को एक नजर देखने की लालसा से धार भी जा पहुँचा। ऐसे आकर्षक व्यक्तित्व के धनी राजा भोज के व्यक्तित्व को सबने अपनी-अपनी तरह से देखने, परखने और प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। राजनीतिज्ञों ने राजनैतिक, शास्त्रज्ञों ने शास्त्रीय, कवियों ने रसिक तथा लोक ने उसे विविध वर्णी प्रकट किया है। भोज संबंधी मिथक प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। एक इतिहास पुरुष के मिथक बन जाने का राजा भोज सर्वोत्तम उदाहरण हैं।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र (1/4/16) के अनुसार चारों वर्णों तथा आश्रमों का समुच्चय लोक है. चतुर्वर्णाश्रमों लोक:। चारों वर्णों तथा चारों आश्रमों में पूरा समाज समाहित हो जाता है। स्पष्ट ही लोक यानी पूरा समाज। समाज और सामाजिक यात्रा अबाध होती है। इसमें पारिवारिक, वैचारिक, व्यावहारिक, व्यावसायिक, धार्मिक, रचनात्मक, कला संबंधी और ज्ञात आकर्षक व्यक्तित्वों को अपनी-अपनी तरह से अभिमण्डित करने का प्रवाह होता है। यह अभिमंडन गीतों, लोककथाओं, गाथाओं, कहावतों, सम्पूर्ण छोटे-बड़े काव्यों, नाट्यों आदि विविध माध्यमों द्वारा अपनी-अपनी भाषाओं, लोकभाषाओं में होता रहता है। जैसे-जैसे समय बीतता है, उसमें कुछ छूटता जाता है तो कुछ जुड़ता भी जाता है। यह जोड़ बाकी होते-होते उसकी कई परिणतियाँ होती जाती हैं। कई बार स्मृतियों में संचरित अनेक व्यक्तित्व आपस में गड्ड-मड्ड हो जाते हैं। एक की बातें दूसरे के साथ भी जुड़ जाती हैं। किसी व्यक्तित्व के प्रति किसी का आकर्षण भी ऐसा जानबूझकर या अनजाने ही हो जाता है। जैसे पहले शूद्रक कथा बड़ी लोकप्रिय थी। राजा विक्रमादित्य की कथाएँ भी लोकप्रिय थीं। ऐसी ही एक रंजक कथा पर प्राचीन अनुपलब्ध नाटक 'विक्रान्तशूद्रक' था। उसकी कथा आजकल मालवी में राजा विक्रमादित्य संबंधी प्राप्त होती है। तो कभी-कभी कई व्यक्तित्वों को मिलाकर लोकनायक का व्यक्तित्व अभिमण्डित होता है। ज्ञात इतिहास में विक्रम संवत् की पहली सहस्त्राब्दी का आरंभ लोकनायक विक्रमादित्य से होता है तथा दूसरी सहस्त्राब्दी का आरंभ भोज से होता है। तीसरी सहस्त्राब्दी का आरंभ सम्पूर्ण भारत के अपूर्व गणतंत्र से होता है।

अत: यह असम्भव नहीं है कि लोक परम्परा अपने लोकप्रिय राजा भोज को भी ऐसे बहुरंगी लोकरंग से अभिमंडित करता रहा हो। इसमें भाषा कहीं आड़े नहीं आती। लोकमानस का उल्लास सब दूर एक जैसा होता है। फिर वह चाहे संस्कृत में कहें, प्राकृत में कहें, अपभ्रंश में कहें, परवर्ती मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रजी, राजस्थानी, मालवी, बुन्देली, गुजराती, मराठी, उड़िया, बंगाली, पंजाबी, तिब्बती, सिंहली या मंगोली किसी भी भाषा में कहें, वह बात लोकरंग से रंजित ही होगी। इस प्रकार मूल वस्तु की व्याप्ति ही नहीं अतिव्याप्ति होती जाती है। इस अतिव्याप्ति में रंजना होती है, अतिरंजना भी हो सकती है, परन्तु तब भी इस मूल बात को कोई भूल नहीं पाता कि मालवा का राजा भोज था। उसकी राजधानी धारानगरी थी। राजा भोज वीर, दानी, लोक-हितकारी, विवेकशील और उदार था। उसकी वीरता की एक कहावत प्रसिद्ध है- 'काँ राजा भोजए ने काँ गंगू तेली'। इसे दशोरी मालवी में इस प्रकार भी कहते हैं. 'कठे राजा भोज, ने कठे गंगू तेली'। इस कहावत का मूल वास्तव में इतिहास सम्मत है। उपर्युक्त कहावत में तेली को तेलन भी कहा जाता है- 'कठे राजा भोज, ने कठे गांगी तेलन'। कहावत का यह पाठ अपने मूल के अधिक निकट है, क्योंकि राजा भोज का समकालीन गांगेयदेव कलचुरि ज्ञात है। गांगेयदेव को लोक ने गांगी कर दिया। तेलंग को तेलन कर दिया। इस प्रकार गांगेयदेव तेलंग.गांगी तेलन हो गयी। इस गांगयदेव ने राजा मुंज को अपमानित कर उसका वध कर दिया था। प्रबंध चिन्तामणि के अनुसार राजा भोज जब राजा बनाए तब उसे इस वध की घटना का नाटक दिखाया गया। क्रोधित होकर राजा भोज ने उस पर आक्रमण करके उस पर गौरवशाली विजय प्राप्त की। राजा भोज के वंशज अर्जुन वर्मा (1210 से 1218 ईस्वी) के समय उसकी ही प्रशस्ति में रची गयी नाटिका पारिजात मंजरी के आरंभ (1/3) में बताया गया है कि मनोरथ पूर्ण होने पर राजा भोजदेव ने 'गांगेय भंगोत्सव' आयोजित किया था।

माण्डव तथा नालछा के मध्य में एक पहाड़ी के बारे में बताया जाता है कि उस पर ही इस तेलंग को फाँसी दी गयी थी। यह तेलंगाना का भी शासक था। अत: उसे तेलंग, तेलन, तेली कहा जाने लगा। ग्वालियर में तेली का मन्दिर भी इसी तेलंग का बताया जाता है। वहाँ भी लोक ने तेलंग शब्द को तेली कर दिया और वही प्रचलन में है।

तेलंग शब्द का लोक ने सरलता से तेलन (तेली की स्त्री) शब्द बनाकर उसके आधार पर मनोरंजक बातें तैयार कर लीं। माण्डव-नालछा के बीच की एक तेलण टेकरी के बारे में लोक में यह बात बतायी जाती है कि राजा भोज के समय की तेलन ने अपना घाघरा झटका तो इससे इतनी धूल उड़ी कि उस धूल की एक यह टेकरी बन गयी। जिस तेलन के घाघरे की धूल से टेकरी बन जाये, उस तेलन के आकार तथा उसके घाघरे के आकार-प्रकार की कल्पना भी विराट ही होगी। फिर यह भी कि वह घाघरा कभी धोया ही नहीं गया, न कभी झटका गया। फलत: उसमें निरन्तर धूल जमा होती रही और इतनी धूल जमा हो गयी कि झटकने से उड़ी धूल के जमाव से टेकरी ही तैयार हो गयी। यह सम्भव है कि तेलंग सेना के प्रसंग में वह टेकरी बनी हो।

राजा भोज परमार वंश का रत्न था। उनकी कुल राजधानी धारा नगरी थी। धार और परमारों का अभिन्न संबंध था। उसके संबंध में एक पद प्रचलित है-

जहाँ परमार तहाँ धार। जहाँ धार तहाँ परमार।
बिना धार नहीं परमार। बिना परमार नहीं धार।।

लोक प्रचलित कथाओं के भोज संबंधी संग्रह विभिन्न भाषाओं में अनेक होते रहे। कई भोज प्रबंध हैं। बल्ल, शुभशीलमणि, रत्न मंडनमणि, सत्यराज मणि, राजशेखर आदि के संस्कृत में भोज प्रबंध हैं। उनमें से बल्लाल का भोज प्रबंध सर्वप्रसिद्ध है। राजवल्लभ का भोज चरित प्रकाशित है। शुभशील मणि के पंचशीत प्रबोध प्रबंध में भी भोज संबंधी अनेक कहानियाँ हैं। मेरुतुंग की प्रबंध चिन्तामणि में जो भोज संबंधी विभिन्न कहानियाँ प्राप्त होती हैं, उनमें से बहुत सी को ऐतिहासिक माना जाता है। यह पुस्तक मालवा के धार जिले के वर्धमानपुर (वर्तमान बदनावर) में चौदहवीं शताब्दी में

इस मूल बात को कोई भूल नहीं पाता कि मालवा का राजा भोज था। उसकी राजधानी धारानगरी थी। राजा भोज वीर, दानी, लोक-हितकारी, विवेकशील और उदार था। उसकी वीरता की एक कहावत प्रसिद्ध है- 'काँ राजा भोजए ने काँ गंगू तेली'। इसे दशोरी मालवी में इस प्रकार भी कहते हैं. 'कठे राजा भोज, ने कठे गंगू तेली'। इस कहावत का मूल वास्तव में इतिहास सम्मत है।

लिखी गयी थी। ये कहानियाँ संक्षिप्त होने पर भी रोचक, तथ्यात्मक और भोज संबंधी विभिन्न लोकदृश्य हैं।

विभिन्न भोजप्रबंधों में भोज के व्यक्तित्व और कृतित्व के विभिन्न पक्ष प्रकट होते हैं। बल्लाल के सुप्रसिद्ध भोजप्रबंधों में कविमंडल के साथ भोज को प्रस्तुत करते हुए उसके काव्य प्रेम और सहृदयता को रेखांकित किया गया है। प्रबंध चिन्तामणि में भोज के जीवन के विभिन्न पक्ष प्रस्तुत हुए हैं, जिनमें शत्रुओं के साथ उसके व्यवहार को भी बताया गया है। राजवल्लभ के भोजचरित में भोज की वीरता, विवाह, परकाया प्रवेश आदि के साथ ही पारिवारिक परिवेश भी प्रस्तुत किया गया है। जैन साहित्य में मानतुंगए भोज तथा कालिदास संबंधी कथाएँ भी हैं। कालिदास और पार्श्वाभ्युदय संबंधी कथाविस्तार से उसकी टीका में प्राप्त होती है। जैन कवि मालदेव रचित भोजचरितराहा के अनुसार सिंहासन बत्तीसी की कथा राजाभोज के कारण ही प्रकाश में आयी।

सिंहासन बत्तीसी की कथा सरस अवदान।
राजा भोज न होत तउकों तमु जानत वात।।

देवभद्रसूरि के श्रेयांसचरित में धनेश्वरसूरि के राजा की सभा में वाद-विवाद का उल्लेख इस प्रकार किया गया है-

तपणु धनेसर सूरि जातो जैणं निरीह पहुणा वि।
भोज न रिंद सबाए गहिमा वाचंमि जयलच्छी।।

मुंजप्रबंध, भोजगांगेयप्रबंध, भोजसुभद्राप्रबंध,भोजवृत्त आदि की रचनाएँ भी परवर्तीकाल में होती रहीं। भोज संबंधी कितने ही प्रबंध लिखे गये। सर्वप्रसिद्ध भोज प्रबंध तो बल्लाल का है। परन्तु वत्सराज, पऽगुप्त, रत्न मंदिर, शुभशीलमणि के भोज प्रबंध भी ज्ञात हैं। एक अज्ञातकर्ता का भोज प्रबंध सार भी है। राजवल्लभ (सं.1524) का भोजप्रबंध बताया जाता हैए जो भोजचरित होना चाहिएए जो प्रकाशित है। शुभशीलमणि के पंचशतीप्रबंध में भी भोज संबंधी अनेक कथाएँ प्राप्त होती हैं।

राजस्थानी पद्यों में अनेक भोजचरित रचे गये। 17वीं सदी के मालदेव रचित भोजचौपाई बीकानेर भण्डार में है। इसमें तीन खण्ड और 1600 से अधिक पद्य रचे हैं। 1671 संवत् में रचे गये सारंगकवि ने भोजचरितरास में 458 पद्य हैं। हेमाणंद ने 1654 में भोजचरित्ररास बनाया था। कुशलधीर ने 206 पद्य की भोजराजा चौपाई बनाई, जो बीकानेर में प्राप्त हैं। नरपति नाल्ह 1272 संवत् में वीसलदेवरासो बनाया, जिसमें भोज की बेटी के वीसलदेव के साथ विवाह की चर्चा है। मुल्ह कवि रचित भोज राजा परकाया प्रवेशिनी पंदरवी विद्या कथा भी प्राप्त होती है। राजस्थानी में वृद्धा और माघ संवाद में राजा भोज विद्यमान है। राजस्थानी, गुजराती, बुन्देली, पंजाबी, मराठी, मालवी सहित भारतीय विभिन्न भाषाओं और बोलियों में राजा भोज की कहानियाँ प्राप्त होती हैं। विविध विषयक परवर्ती ग्रन्थों में राजा भोज को राजा भोज, धारेश्वर या भूपाल नाम से बार-बार उद्धृत किया गया है। भूपाल राजा भोज का वाचक है। यह सम्भव है कि 'भूपाल' के नाम पर ही आज के 'भोपाल' का नाम पड़ा हो। राजा भोज परमार वंश के सर्वाधिक चमकदार नक्षत्र थे। उनके विषय में राजस्थानी में कई उक्तियाँ प्रचलित हैं। यथा-

पिरथी बड़ा पँमार पिरथी परमारा तणी।
एक उजीणी धार बीजो आबू बेसणो।।
ज्याँ परमार त्याँ धार हेए धारा जडे परमार।
बिना परमार धारा नहींए धारा बिना पमार।।

राज भोज काव्य के परम रसिक थे। विजयनगर प्रशस्ति में कृष्णराय की स्तुति में कहा गया कि वह काव्य, नाटक, अलंकार का मर्मज्ञ दूसरा भोज था। तेरहवीं सदी के परमार भोज द्वितीय को प्रथम भोज के समान हम्मीर महाकाव्य में बताया गया है। ऐसे बहुगुण सम्पन्न धाराधीश भोज इसलिए आज भी सादर याद किये जाते हैं, वह एक लोकप्रिय राजा थे। वे जन के अपने राजा थे। शासन की शैली ही ऐसी थी कि जनता सुख दु:ख भूलकर उन्हें अपना और अपने में से एक मानने लगी थी। वे राजनायक होकर भी इसीलिए जननायक बन गये क्योंकि जनता हृदय से उन्हें चाहती थी, इसीलिए उनकी प्रशंसा की कथा, गाथा, कहावतें, गीत आदि प्रचलित होते गये। अपने समय ही नहीं परवर्ती काल में भी ऐसे लेखन की धारा बहती ही चली गयी। फलत: इतिहास पुरुष होते हुए भी राजा भोज लोक कथाओं के नायक बनते चले गये। उनका व्यक्तित्व और राजशैली लोकाकर्षण का केन्द्र बनता चला गया। फलत: अलौकिकता की भी उनके प्रभामंडल में मिलावट होती चली गयी। परिणामत: वे इतिहास पुरुष होते हुए मिथक पुरुष बनते चले गये। यथार्थ, लोक और मिथक का ऐसा मिश्रण तैयार होता गया कि अब एक हजार वर्ष के बाद उसमें से यथार्थ की परख कर उसे पहचान पाना कभी-कभी कठिन हो जाता है। यह स्थिति किसी एक भाषा में नहीं, बहुधा सभी भाषाओं तथा लोक भाषाओं में पायी जा सकती है।

चोरों का संगी राजा भोज

डॉ. पूरन सहगल

राजा भोज कई बार वेश बदलकर रात में नगर भ्रमण करते थे। एक बार आधी रात के समय उन्हें पाँच व्यक्ति आते हुए दिखे। भोज को देखकर वे ठिठककर खड़े हो गये। उनके ठिठकने के भाव को देखकर राजा समझ गया कि ये सामान्य नागरिक नहीं हैं। भोज ने भी वैसा ही व्यवहार किया। भोज डरता-डरता उनके पास गया और पूछा 'भाई तुम कौन हो? और आधी रात में नगर में क्यों घूम रहे हो? उन पाँचों ने प्रति प्रश्न किया कि तुम भी तो आधी रात में घूम रहे हो। पहले तुम बताओ तुम कौन हो? राजा भोज ने कहा 'जो तुम सोई मैं। 'पाँचों बोले हम तो चोर हैं? भोज ने कहा मैं भी चोर हूँ। आज तुम मुझे भी अपने साथ ले चलो। मिलकर चोरी करेंगे। एक चोर बोला सब अपना-अपना गुण बताओ। पहला चोर बोला- मैं बीस हाथ ऊँची, दीवार पर दौड़कर चढ़ सकता हूँ और छत पर या मकान में प्रवेश कर सकता हूँ। दूसरा चोर बोला- मैं घोड़ों का पारखी हूँ और साईस पने में माहिर हूँ। तथा कैसा भी ताला हो मैं उसे भी खोल सकता हूँ। तीसरा चोर बोला- मैं कुशल गुप्तचर हूँ। वेश बदलने में मेरा मुकाबला कोई नहीं कर सकता। चौथा चोर बोला- मैं हथियार बनाने में माहिर हूँ। मेरी बनाई हुई तलवार लोहे की साँट को भी काट सकती है। हथकड़ियाँ काट देना मेरे बाएँ हाथ का काम है। ताला तो मैं चुटकियों में खोल सकता हूँ। महलों और किलों के फाटक खोलने में मेरा कोई मुकाबला नहीं है। पाँचवा चोर बोला मैं पशु-पक्षियों की बोली बोलने व समझने में माहिर हूँ। अब भोज की बारी थी। भोज ने कहा जो कलाएँ तुम पाँचों को आती है, मैं उन सब में तो माहिर हूँ ही। इसके अलावा धन कहाँ छुपा है? धरती में या तिजोरी में अथवा दीवार में, मैं बता सकता हूँ। इससे भी बड़ी कला यह कि अगर हम पकड़े गये तब मैं छूटने और छुड़ाने की कला भी जानता हूँ।

ऐसा गुणी साथी पाकर सब खुश हो गये। अब विचार यह है कि आज चोरी कहाँ की जाये? सबने कहा आज तो राजा भोज के महल में चोरी की जाये। सब सहमत हो गये। महल के पिछवाड़े पहुँचकर एक चोर दौड़कर खड़ी दीवार पर चढ़ गया और महल के खास दरवाजे पर पहुँच गया। उसने वहाँ से रस्सी नीचे लटका दी। शेष पाँचों चोर ऊपर चढ़ गये। चोर बने राजा भोज ने खजाने की तिजोरी दिखा दी। एक चोर ने उसका ताला खोल दिया। चोरों ने धन की पोटलियाँ बाँधना शुरू की। मौका पाकर भोज वहाँ से खिसक गये और सैनिक भेजकर माल मुद्दे चोरों को पकड़वा दिया।

सबेरे दरबार लगा। चोरों की मुश्के बाँधकर दरबार में हाजिर किया गया। चोरों ने जब सिंहासन पर बैठे राजा को देखा तो अचम्भे में पड़ गये। अरे! यह तो रात वाला चोर है। सबके मुँह से एक साथ निकला। राजा भोज ने मुस्करा कर पूछा- अचम्भे में मत पड़ो। मैं वही हूँ। चोरों ने कहा तुमने हमें धोखा दिया है। भोज ने कहा मैंने अपना कर्तव्य निर्वाह किया है। मैं राजा हूँ। राज्य की रक्षा सुरक्षा मेरा कर्तव्य है। तुमने चोरी की है। इसकी सजा तो आजन्म कारावास है। चोरों ने कहा आप ने हमारे साथी के रूप में रहकर चोरी में भागीदारी की है, इसलिए आप भी चोर ही हुए। जो सजा हमारी वही आपकी। आप हमारे राजा हैं। आपका सम्मान करना और रक्षा करना हमारा भी कर्तव्य

चोरों ने कहा आप ने हमारे साथी के रूप में रहकर चोरी में भागीदारी की है, इसलिए आप भी चोर ही हुए। जो सजा हमारी वही आपकी। आप हमारे राजा हैं। आपका सम्मान करना और रक्षा करना हमारा भी कर्तव्य है। हमारा एक ही कहना है। आपने चोर के रूप में अपना गुण बताया था कि आप पकड़े जाने पर छुड़वा सकते हैं। उस वचन का पालन करना भी आपका कर्तव्य है। आप वचन पालक कहे जाते हैं। इस कारण अपने वचन का पालन करते हुए हमें छुड़वाइये।

है। हमारा एक ही कहना है। आपने चोर के रूप में अपना गुण बताया था कि आप पकड़े जाने पर छुड़वा सकते हैं। उस वचन का पालन करना भी आपका कर्तव्य है। आप वचन पालक कहे जाते हैं। इस कारण अपने वचन का पालन करते हुए हमें छुड़वाइये।

राजा भोज ने जोरदार ठहाका लगाते हुए कहा-यदि तुम पाँचों हमें यह वचन दो कि आज के बाद चोरी नहीं करोगे और अच्छे नागरिक की तरह श्रम करके अपना जीवन चलाओगे, तो हम तुम्हें छुड़वा देंगे। चोरों ने वचन दिया। राजा भोज ने कहा तुम पाँचों बहुत गुणी हो। राज्य को तुम्हारी सेवाओं की आवश्यकता है। हम तुम्हें अपनी सेना में लेते हैं। तुम हमारी सेना के गुप्तचर टुकड़ी में शामिल किए जाते हो। शेष को भी उनके गुणों के अनुसार राजसेवा में लिया जाता है। इससे तुम्हें जीवन यापन करने हेतु वेतन मिलेगा, जिससे चोरी करना भी छूट जायेगा। चोरों ने राजा भोज की जय-जयकार की और राजसेवा में लग गये।

विवेकशील भोज

एक समय की बात है। एक महिला टोकरे नुमा पलने में अपने बच्चे को लिये अपनी राह जा रही थी। उसे प्यास लगी तो उसने आसपास पानी की टोह लगाई। थोड़ी दूर पर उसे एक बावड़ी दिखाई दी। वह बावड़ी पर पहुँची। पालना सिर से उतारकर थले पर रखा और बावड़ी की सीढ़ियाँ उतरकर पानी पीने गयी। तभी बाहर एक और स्त्री आई। उसकी संतान नहीं थी। उसने मौका अच्छा देखा और बच्चे को उठाकर चल पड़ी। इतने में बच्चे की माँ पानी पीकर बावड़ी से बाहर आयी। पालना खाली! बच्चा कहाँ गया? वह चिंता में पड़ गयी। कहीं कोई जानवर तो नहीं उठा ले गया? उसने चारों ओर नजर घुमाई तो उसे एक औरत दिखी, जो तेज गति से चली जा रही थी। वह जान गयी कि मेरे बच्चों को उसी ने चुराया है। वह बेतहाशा उसके पीछे दौड़ पड़ी। थोड़ी दूर पर उसने उसे धर दबोचा। 'अरी दुष्ट चोरनी, मेरे बच्चे को कहाँ लिये जा रही हो?' वह चोर महिला बहुत चालाक निकली। उसने कहा। 'अरी चुड़ैल तू कौन है। यह तो मेरा बच्चा है। मैं तो अपने बच्चे को ही लिये जा रही हूँ।'

दोनों की छीना-छपटी और तू-तू, मैं-मैं की आवाज आसपास के किसानों ने सुनी तो दौड़कर वहाँ पहुँच गये। दोनों के अपने-अपने अधिकार। कोई भी समझ नहीं पाया। सब मिलकर उन्हें प्रधान के पास ले गये। मामला वहाँ भी नहीं सुलझा। तब दोनों को राजा भोज के दरबार में ले गये। राजा भोज ने अच्छी तरह दोनों की बात सुनी। उनकी भी समझ में कुछ नहीं आया। राजा समझ तो गये लेकिन दोनों की जिद बहुत पक्की थी।

राजा भोज ने कहा दोनों अपनी-अपनी जिद पर अड़ी हुई हैं, इसलिए इस बच्चे को दो टुकड़ों में बाँटकर आधा-आधा दोनों को दे दिया जाये? बच्चे के टुकड़े हम स्वयं करेंगे। राजा का ऐसा आदेश सुनते ही असली माता घबरा उठी। उसका चेहरा फीका पड़ गया। दिल धड़क उठा। दूसरी राजा के इस आदेश से विचलित नहीं दिखी। उसने तत्काल सहमति प्रकट कर दी। असली माँ तो कुछ बोल ही नहीं सकी। वह तो बेभान होने लगी थी।

बच्चे को नीचे सुला दिया गया। राजा भोज ने म्यान में से तलवार निकाली और बच्चे को काटने के लिए ऊपर उठाई। तभी बच्चे की असली माँ चीख उठी। मत काटो। मेरे बच्चे को मत काटो। भले ही इसे दे दो, लेकिन काटो मत। उसकी आर्त पुकार सुनकर भोज ने तलवार म्यान में कर ली। राजा ने कहा च्यह बच्चा इसे दे दो। यही इसकी असली माँ है। यह दूसरी स्त्री बच्चे की चोरनी है। इसे कारावास में बंद कर दो। न्याय हो गया। माँ को उसका बच्चा मिल गया। चोरनी को दंड।

महाराज विक्रमादित्य शोध संस्थान का नवीन प्रकल्प 'विक्रम संवाद' उन ऐतिहासिक घटनाओं, संस्कृति एवं साहित्य के साथ अनेक अनछुये पहलुओं को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास है. हमारे इस प्रकल्प में आपके रचनात्मक लेखकीय सहयोग की अपेक्षा है. आपके प्रयासों से नयी पीढ़ी को इतिहास की प्रामाणिक जानकारी दी जा सकेगी

-संपादक

आस्था के राम सेतु पर लगेगी वैज्ञानिकता की मुहर

अजय बोकिल

रामायण में वर्णित राम सेतु केवल एक मिथक है? क्या राम की वानर सेना ने सचमुच ऐसा कोई पुल तैयार किया था? किया था तो उसका काल क्रम कौन सा है? या फिर यह कोई प्राकृतिक संरचना है, जिसे पुल के रूप में जाना जाता है? ऐसे तमाम सवालों के जवाब अब भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण राम सेतु पर अपने अध्ययन और खोज से देने वाला है। पहले इस पुल को बीच में से तोड़कर भारत के पूर्वी और पश्चिमी तटों को जोड़ने वाले समुद्री मार्ग को सुगम करने के लिए पूर्ववर्ती केन्द्र सरकार ने महत्वाकांक्षी 'सेतु समुद्रम नहर परियोजना' तैयार की थी। लेकिन वर्तमान सरकार ने राम सेतु को जन आस्था का विषय मानकर इस योजना को स्थगित कर दिया है। इस परियोजना में राम सेतु को क्षति पहुंच सकती थी। इसलिए अब वैकल्पिक योजना पर विचार हो रहा है। इतना तय है कि राम सेतु की ऐतिहासिकता पर बहस हो सकती है, लेकिन उसको लेकर लोगों में जो अगाध श्रद्धा है, उस पर शायद ही कोई सवाल है।

> एक वैज्ञानिक अध्ययन में यह दावा भी किया गया है कि राम सेतु मानव निर्मित है और इसका निर्माण करीब 7 हजार वर्ष पहले मनुष्य ने ही किया है। कुछ का मानना है कि यह 17 लाख वर्ष पुराना है। 'एएसआई' के शोध में इसी बात की पुष्टि करने का प्रयत किया जाएगा कि राम सेतु आखिर कब बना या बनाया गया? क्योंकि इसी से रामायण के काल क्रम निर्धारण में भी मदद मिलेगी।

'वाल्मीकि रामायण' के अनुसार जब भगवान श्रीराम ने अपनी पत्नी सीता को लंकापति रावण के कब्जे छुड़ाने के लिए लंका द्वीप पर चढ़ाई की। उस वक्त उन्होंने सभी देवताओं का आह्वान किया और युद्ध में विजय के लिए आशीर्वाद मांगा था। इनमें समुद्र के देवता वरुण भी थे। राम ने वरुण से समुद्र पार जाने के लिए रास्ता मांगा था। लेकिन जब वरुण ने उनकी प्रार्थना नहीं सुनी तो उन्होंने समुद्र को सुखाने के लिए धनुष उठाया। भयभीत वरूण ने क्षमायाचना करते हुए बताया कि श्रीराम की सेना में मौजूद नल-नील नामक वानर जिस पत्थर पर राम नाम लिखकर समुद्र में डाल देंगे, वह तैर जाएगा और इस तरह आपकी सेना पुल बनाकर समुद्र पार कर लेगी। वरूण के इस कथन के बाद श्रीराम की सेना ने लंका तक समुद्र पर पुल बनाया और लंका पर विजय प्राप्त की। रावण का वध कर सीता माता को छुड़ाया।

'वाल्मीकी रामायण' में वर्णित राम सेतु को लेकर वैज्ञानिक दृष्टि से पहली बार चर्चा तब शुरू हुई जब अमेरिकी अंतरिक्ष संस्थान 'नासा' ने 1993 में भारत के दक्षिण में धनुषकोडि और श्रीलंका के पम्बन द्वीप के बीच समुद्र में डूबी 48 किमी लंबी एक प्राकृतिक पट्टी के चित्र जारी किए। ये चित्र जेमिनी 11 सेटेलाइट से प्राप्त किए थे। तब इस कुछ विवाद भी हुआ था। क्योंकि हिंदू इसे 'राम सेतु' तथा ईसाई इसे 'एडम्स ब्रिज' के नाम से पुकारते हैं। इसके 22 साल बाद भारतीय आई.एस.एस 1-ए उपग्रह ने तमिलनाडु तट पर स्थित रामेश्वरम और जाफना द्वीपों के बीच समुद्र के भीतर भू-भाग का पता लगाया और उसके चित्र लिए। इससे राम सेतु जैसी संरचना की पुष्टि हुई। अब वैज्ञानिको में मतभेद इस बात पर है कि यह नैसर्गिक संरचना है अथवा मानव निर्मित संरचना है? जाहिर है कि इसका खुलासा होने में वक्त लगेगा।

इसमें संदेह नहीं कि जिसे हम हजारों सालों से राम सेतु के नाम से जानते हैं, वह दक्षिण भारत में तमिलनाडु के रामेश्वरम तीर्थ से लेकर श्रीलंका के पूर्वोत्तर में स्थित मन्नार द्वीप तक कैल्शियम कार्बोनेट (चूना पत्थर) की उथली और लंबी श्रृंखला है। इसकी कुल लंबाई करीब 48 किलोमीटर है। समुद्र में इन चट्टानों की गहराई सिर्फ 3 फुट से लेकर 30 फुट के बीच है। यह संरचना हिंद महासागर में मन्नार की खाड़ी और पॉक जलडमरू मध्य को एक दूसरे से अलग करती है।

'रामायण' में कहा गया है कि भगवान राम की वानर सेना के दो इंजीनियरों नल और नील ने चट्टानों पर राम नाम

लिख दिया, जिससे वो पानी में डूबने के बजाए तैरने लगे और इस तरह लंका द्वीप तक एक पुल तैयार हो गया। राम कथा में वर्णित प्रसंग की पुष्टि इस वैज्ञानिक तथ्य से होती है कि समुद्र में बनी यह पुलनुमा संरचना - कोरल (मूंगा) और सिलिका पत्थर से बनी है। ये दोनों पत्थर जब गरम हो जाते हैं तो उनमे हवा भर जाती है, जिससे वो हल्के होकर पानी पर तैरते रहते हैं। हो सकता है कि नल और नील इस रहस्य को जानते हों और उन्होंने इसी तकनीक से राम सेतु का निर्माण किया हो।

वाल्मीकि रामायण में इसे 'नल-सेतु' कहा गया है। रामायण में वर्णन है कि पुल लगभग पांच दिनों में बन गया, जिसकी लम्बाई सौ योजन और चौड़ाई दस योजन थी। नल के पर्यवेक्षण में वानरों ने बहुत प्रयत्न पूर्वक इस सेतु का निर्माण किया था- (वाल्मीकि रामायण-6/22/76)। वाल्मीकि रामायण में कई प्रमाण हैं कि सेतु बनाने में उच्च तकनीक प्रयोग किया गया था। कुछ वानर बड़े-बड़े पर्वतों को यंत्रों के द्वारा समुद्र तट पर ले आए थे। कुछ वानर सौ योजन लम्बा सूत पकड़े हुए थे, अर्थात पुल का निर्माण सूत से सीध में हो रहा था- (वाल्मीकि रामायण- 6/22/62)

गीताप्रेस गोरखपुर से छपी 'श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण-कथा-सुख-सागर' में वर्णन है कि राम ने सेतु के नामकरण के अवसर पर उसका नाम 'नल सेतु' रखा। इसका कारण था कि लंका तक पहुंचने के लिए निर्मित पुल का निर्माण विश्वकर्मा के पुत्र नल द्वारा बताई गई तकनीक से संपन्न हुआ था। महाभारत में भी राम के 'नल सेतु' का उल्लेख आया है। अन्य ग्रंथों में कालिदास की रघुवंश में इस सेतु का वर्णन है। स्कंद पुराण (तृतीय, 1.2.1-114), विष्णु पुराण (चतुर्थ, 4.40-49), अग्नि पुराण (पंचम-एकादश) और ब्रह्म पुराण (138.1-40) में भी 'राम सेतु' का जिक्र किया गया है। सदियों पहले दक्षिण भारत से श्रीलंका के बीच कोई पुल था, इसका उल्लेख कुछ विदेशी यात्रियों ने भी किया है। उदाहरण के लिए अरब यात्री इब्न खोरदाबदेह ने ई. 850 में अपनी पुस्तक 'बुक ऑफ रोड्स एंड किंगडम्स' में सेत बंधाई (समुद्री पुल) का उल्लेख किया है। अल बरूनी ने भी ई.1030 में इसी तरह का जिक्र किया है। ब्रिटिश मानचित्रकार 1804 में पहली बार राम सेतु का चित्र तैयार किया। उसने इसे एडम्स ब्रिज कहा।

बहरहाल राम सेतु का अस्तित्व है, इसमें दो राय नहीं हैं। कहा जाता है कि है पहले यह समुद्र सतह से कुछ ऊपर तक तक था, जिससे तमिलनाडु के लोग पैदल ही श्रीलंका आते-जाते थे। इतिहासकारों के अनुसार साल 1480 में आए एक भयंकर चक्रवात में यह प्राकृतिक काफी कुछ टूट गया और पानी में डूब गया। अभी भी यह जलस्तर से कुछ ही नीचे है। एक वैज्ञानिक अध्ययन में यह दावा भी किया गया है कि राम सेतु मानव निर्मित है और इसका निर्माण करीब 7 हजार वर्ष पहले मनुष्य ने ही किया है। कुछ का मानना है कि यह 17 लाख वर्ष पुराना है।

'एएसआई' के शोध में इसी बात की पुष्टि करने का प्रयत्न किया जाएगा कि राम सेतु आखिर कब बना या बनाया गया? क्योंकि इसी से रामायण के काल क्रम निर्धारण में भी मदद मिलेगी। साथ ही रामकथा की वाचिक परम्परा को ऐतिहासिक आधार भी मिलेगा। भारतीय इतिहास कांग्रेस ने राम सेतु पर शोध की जिम्मेदारी सीएसआईआर के अंतर्गत काम करने वाले राष्ट्रीय समुद्रविज्ञान संस्थान गोवा (नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओशनोग्राफी संक्षेप में एनआईओ) को सौंपी है। एनआईओ के निदेशक प्रो. सुनील कुमार सिंह ने बताया कि यह अध्ययन पुरातात्विक प्राचीन वस्तुओं, रेडियोमेट्रिक और थर्मोल्यूमिनिसेंस (टीएल) पर आधारित होगा। जियोलॉजिकल टाइम स्केल एवम् अन्य सहायक पर्यावरणीय डेटा के जरिए इस सेतु का अध्ययन किया जाएगा। रेडियोमेट्रिक तकनीक के जरिए इस स्ट्रक्चर की उम्र का पता लगाया जाएगा। इस स्ट्रक्चर में कोरल्स (मूंगा) और प्यूलिस पत्थरों की बहुतायत है। कोरल्स में कैल्शियम कार्बोनेट होता है जिसके जरिए हमें इस पूरे सेतु की उम्र का पता चलेगा और रामायण के कालखंड का पता लगाने में मदद मिलेगी।

गौरतलब है कि रेडियोमेट्रिक डेटिंग किसी वस्तु की उम्र का पता लगाने के लिए रेडियोधर्मी अशुद्धियों की तलाश करता है। वहीं टीएल डेटिंग में किसी वस्तु को गर्म कर उससे निकलनेवाले प्रकाश विश्लेषण किया जाता है। माना जाता है कि ये वैज्ञानिक विधियां मिथक और ऐतिहासिक तथ्यों की दूरियों को कम करेंगी। अगर पुल निर्माण का काल पता लग सका तो रामकथा की सत्यता की भी पुष्टि होगी। हमारे ग्रंथों में राम का समय द्वापर युग को माना गया है। लेकिन आधुनिक काल क्रम से उसकी संगति बिठाना भी जरूरी है। इससे न केवल रामायण बल्कि महाभारत की ऐतिहासिकता पर गहन शोध का नया रास्ता खुलेगा।

पुस्तक चर्चा/डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित

किंवदंती पुरुष महाराज भोज

कथा नायक राजा भोज मालवा का ही यशस्वी शासक था। मालवी की वे कथा-गाथाएँ समाज ने रचीं और समाज के कंठों में ही संचरित होती रहीं। उन्हें कागज पर लाने का कभी गम्भीर प्रयास नहीं किया गया। अब इस ओर प्रयास होने लगे हैं। कुछ वर्ष पूर्व 'चौमासा' पत्रिका का भोज विशेषांक प्रकाशित हुआ था। बाद में उनके अतिरिक्त और भी भोज संबंधी लोक कथाओं और गाथा का संकलन डॉ. पूरन सहगल ने किया है। इधर-उधर बिखरी और पत्रिका में प्रकाशित की अपेक्षा सामग्री जब पुस्तकाकार आ जाती है तो उसकी पहचान बढ़ जाती है और इसमें शक्ति आ जाती है।

डॉ. सहगल द्वारा भोज संबंधी लोक कथाओं के पुस्तकाकार संकलन के प्रकाशन से निश्चय ही मालवी लोकमानस में विद्यमान मालवी महाराजा भोज संबंधी छवि उजागर होगी और यह परखने का पथ प्रशस्त होगा कि भोज की परम्परागत छवि से ये कितनी प्रभावित या स्वतंत्र है। डॉ. पूरन सहगल ने वर्षों के प्रयास से अपनी यायावरी के फलस्वरूप इन कथाओं को संग्रहित किया है।

उनके कथनानुसार उन्होंने अधिकतर लोक कथाएँ मूल मालवी में ही सुनी, किन्तु इन्हें मालवी बोली के बजाये हिन्दी में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जिससे इनकी पहुँच मालवी भाषियों के साथ-साथ अन्य भाषा आश्रितों तक भी पहुँच सके व मालवा के लोक नायक भोज का समग्र चरित्र विश्वव्यापी हो सके। हिन्दी आज विश्व भाषा के रूप में अपना स्थान बनाने में प्रयत्नशील है। इस प्रयास में उसे पर्याप्त सफलता भी मिली है। डॉ. सहगल मालवी के गतिशील अन्वेषक और लेखक हैं। आशा है उनके इस नये प्रकाशन से न केवल मालवी जगत् अपितु भोज के अनुसंधान को भी नया प्रकाश प्राप्त होगा और लेखक का प्रयास फलीभूत होगा।

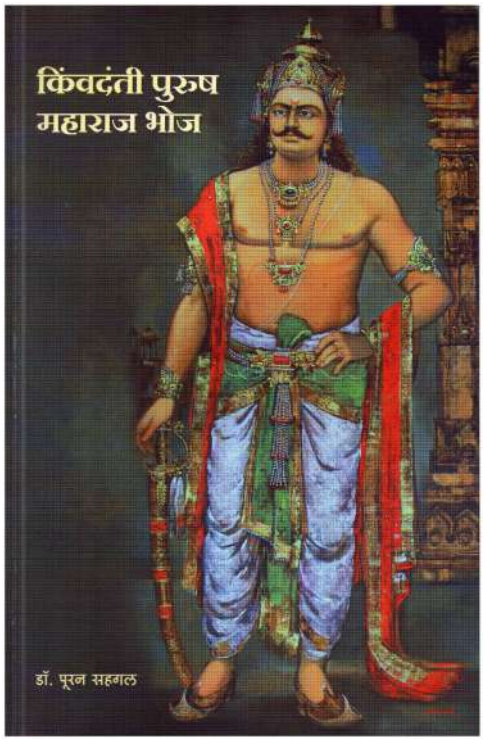

पुस्तक : किंवदंती पुरुष महाराज भोज

लेखक : डॉ. पूरन सहगल

संपादक : श्रीराम तिवारी

मूल्य : 200/- दो सौ रुपये मात्र

प्रकाशक : महाराजा विक्रमादित्य शोध पीठ, स्वराज संस्थान संचालनालय, संस्कृति विभाग, 1 उदयन मार्ग उज्जैन-456010

'पहली बार मेरी समझ में यह बात आयी कि श्रम की कमाई कितनी प्यारी होती है, इसीलिए मैंने निर्णय किया कि आज तक तो मैंने दान या भिक्षा ली ही है। आज मैं भी किसी को दान देने योग्य हूँ। यही सोचकर में एक पंडित के पास गया। मैंने कहा पंडितजी आप भी मेरी तरह भिक्षाटन करते हैं। आपकी गृहस्थी भी है। अभाव भरा जीवन आप जी रहे हैं। अर्थात् गरीब हुए। मैं अपने श्रम की कमाई दान करना चाहता हूँ, आप उसे ले लो। ब्राह्मण बहुत प्रसन्न हो उठा। जब उसे यह ज्ञात हुआ मैं एक ताम्र मुद्रा देना चाहता हूँ तब उसने कहा- अरे महात्मा एक ताम्र मुद्रा के लिए कौन गरीब बनेगा। यह स्वर्ण मुद्रा होती, तब तो मैं गरीब से नीचे दरिद्र भी बन जाता। तुम यह सिक्का किसी ओर को दे दो।'

इसी किताब से